

संक्षिप्त खबरें

बढ़ती ठंड के कारण कई ट्रेन घली लैट
जमुई [झाझा] बढ़ती ठंड के कारण ड्रेनों के परिसर ताजा की स्पीड में थीमी लंगी देखी रही है। आसकर लंगी धूमी तथ कर रही कई ट्रेन अपने निवासित समय से ठंडे ताजा लंगी देखी रही है। शुक्रवार को भी कई ट्रेन अपने निवासित समय से झाझा स्टेन्डों पर प्रवर्षण नहीं किया जिसके कारण रेलवायरियों को काफी परेशानी हो रही है। ट्रेन विभाग को द्वारा दी गई जानकारी अनुसार शुक्रवार को डाउन में डमसफर एक्सप्रेस 1 बट्टा, जावा 2 में 2 घंटा, पूरी एक्सप्रेस 2 घंटा, जावा 3 में 2 घंटा, अपने पूरी जगत्का 2 घंटा की दैरी से झाझा स्टेन्डों पर प्रवर्षण किया जाएगा।

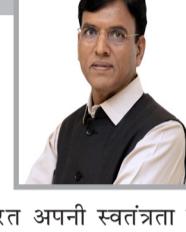
मेंटेनेस कार्य के लिए चार घंटे तक बिजली आपूर्ति सेवा रही बंद
जमुई [झाझा] बिजली विभाग को द्वारा मेंटेनेस कार्य को लेकर शुक्रवार को ढाई घंटे का लंगी को गौर से देती रही थी। इसके कारण रेलवायरियों को काफी परेशानी हो रही है। ट्रेन विभाग को द्वारा दी गई जानकारी अनुसार शुक्रवार को डाउन में डमसफर एक्सप्रेस 1 बट्टा, जावा 3 में 2 घंटा, अपने पूरी जगत्का 2 घंटा की दैरी से झाझा स्टेन्डों पर प्रवर्षण किया जाएगा।

गायब होती बेटियाँःआखिर किसकी बन रहीं शिकार

हरियाणा के हिसार में लापता बेटी की खोज में परेशान एक पिता ने मुख्यमंत्री नायब सैनी से मिलने का प्रयास किया। इस दौरान पुलिस ने सीएम के पास जाने से रोका तो दंपती ने आत्मदाह करने का प्रयास किया। घटना उस समय हुई जब मुख्यमंत्री का काफिला हिसार दौरे पर था। पिता ने खुद पर पेट्रोल डालकर आत्महत्या करने की कोशिश की। लेकिन मौके पर मौजूद सुरक्षा कर्मियों ने उसे समय रहते रोक लिया। गीता कॉलोनी निवासी के अनुसार 29 सितंबर से उसकी 16 साल की बेटी लापता है। थाने में शिकायत देकर गुमशुदगी दर्ज करवा चुके हैं। उसने बताया कि वह गाड़ी चलाता है, बेटी नौरीं कक्षा तक पढ़ी है। बताया कि 29 सितंबर की सुबह 6 बजकर 10 मिनट पर वह घर से निकली थी। लेकिन लगभग चार माह बाद भी बेटी नहीं मिली। आखिर कहाँ गायब हो जाती है देश की बेटियाँ? क्यों नहीं हूँड पाती बेटियों को हमारी पुलिस? इसने महिलाओं की सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े कर दिए हैं। सरकार के तमाम दावों के बावजूद भारत में महिलाओं के खिलाफ अपराध रुक नहीं रहे हैं। इसका एक मुख्य कारण इस मुद्दे को लेकर सभी राजनीतिक दलों में रुचि की कमी है। भारत में बेटियों की सुरक्षा हमेशा से ही सबसे गंभीर मुद्दा रहा है। इसे लेकर कई कानून भी बनाए गए हैं, लेकिन बावजूद इसके देश में लड़कियों के लापता होने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार के अनुसार भारत में पिछले दो साल के बीच 15.13 लाख से ज्यादा लड़कियाँ और महिलाएँ लापता हुई हैं। अब ये महिलाएँ कहाँ गईं, इनके साथ क्या हुआ, इसके बारे में किसी को कुछ भी नहीं पता है। इन लापता लड़कियों में 18 साल से कम और उससे ज्यादा दोनों उम्र की महिलाएँ शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर रोज 345 लड़कियाँ गायब हो जाती हैं। इनमें 170 लड़कियाँ किडनैप होती हैं, 172 लड़कियाँ लापता होती हैं और लगभग 3 लड़कियों की तस्करी कर दी जाती है। इनमें से कुछ लड़कियाँ तो मिल जाती हैं, लेकिन बड़ी संख्या में लापता, किडनैप और तस्करी की गई लड़कियों का कुछ पता नहीं चलता। इस संख्या की गणना गुमशुदा महिलाओं और लड़कियों के सम्बंध में पुलिस स्टेशनों में दर्ज रिपोर्टों के आधार पर की है। हालांकि सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि असल संख्या अधिक हो सकती है क्योंकि कई परिवार सामाजिक कलंक समेत विभिन्न कारणों से लापता लड़कियों की रिपोर्ट दर्ज नहीं करते हैं। आंकड़ों के अनुसार सबसे ज्यादा महिलाएँ मध्य प्रदेश से लापता हुई हैं। एमपी के बाद लिस्ट में दूसरा स्थान बंगलाका है। इन राज्यों के अलावा राजधानी दिल्ली में भी लड़कियों और महिलाओं के गायब होने के कई मामले सामने आए हैं। आंकड़ों की मानें तो केंद्र शासित प्रदेशों में राजधानी दिल्ली इस लिस्ट में सबसे ऊपर है। रिपोर्ट चौकाने वाली है। जो लड़कियाँ गायब होती हैं, उनमें से अधिकतर का पता नहीं चल पाता कि उनके साथ क्या हुआ है? वे कहाँ गई हैं? लापता होने के पाँछे राज क्या है? 16 दिसंबर 2012 को दिल्ली के निर्भया कांड ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था। इस घटना के बाद महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े कई कठोर कानून बनाए गए, लेकिन सवाल ये है कि क्या कानूनों के बनाए जाने के बाद भी देश में महिलाओं की स्थितियाँ सुधरी हैं या महिलाओं के साथ हो रहे अपराधों में कोई कमी नजर आई है भारत में महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा को लेकर कई कानून बनाए

युवा शक्ति को सशक्त बनाना: विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025

विकासत मारेत युवा नता संवाद अपन पमान, समावाशता आर प्रभाव का दशात है। इसकी पारदर्शी चयन प्रक्रिया से लेकर कार्यवाई योग्य विचारों पर इसके विशेष ध्यान तक, यह पहल युवा सशक्तिकरण के लिए हमारी सरकार की प्रतिबद्धता का उदाहरण प्रस्तुत करती है। नवोन्नेषी विचारों के लिए एक मंच प्रदान करने तथा राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर के अग्रणी व्यक्तियों के साथ-साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ सीधे संवाद करने के माध्यम से यह संवाद कार्यक्रम शासन में युवाओं की भागीदारी के लिए एक नया मानदंड स्थापित करता है



डॉ. मनसुख माडावधा
(केंद्रीय यवा कार्यक्रम एवं खेळ

गया। इस परिकल्पना का केंद्र है - को वैश्विक खेल महाशक्ति बनाना।

1

शताब्दी वर्ष-2047 की ओर आगे बढ़ रहा है, ऐसे में हमारे युवा विकसित भारत के निर्माण के हमारे मिशन में सबसे आगे हैं। बिना किसी राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले एक लाख युवाओं को राजनीति में शामिल करने के माननीय प्रधानमंत्री के आह्वान पर, हमने राष्ट्रीय युवा महोत्सव को एक असाधारण रूप में परिकल्पित किया है - विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025। यह संवाद केवल एक आयोजन नहीं है, यह एक अभियान है, युवा सशक्तिकरण, नेतृत्व और व्यावहारिक विचारों का एक जीवंत उत्सव है, जो विकसित भारत से जुड़े देश के दृष्टिकोण के अनुरूप है। राष्ट्रीय युवा महोत्सव की परिकल्पना दो दशकों से अधिक समय से, राष्ट्रीय युवा महोत्सव सांस्कृतिक आदान-प्रदान और युवा ऊर्जा का प्रतीक रहा है। हालांकि, इस वर्ष, हमने अलग तरीके से सोचने का साहस किया। 18 नवंबर, 2024 को, हमने उत्सव के प्रारूप में एक अभूतपूर्व परिवर्तन की घोषणा की, जिसके केंद्र में नेतृत्व, नवाचार और राष्ट्र-निर्माण को रखा विकसित भारत चुनौती, जो तीन चरण वाली प्रतियोगिता है। इस प्रतियोगिता को भारत के सबसे प्रतिभाशाली युवाओं की पहचान करने और उन्हें विकसित करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया है। यह चुनौती योग्यता, समावेश और पारदर्शिता पर आधारित है, जो भौगोलिक या पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना हर युवा भारतीय को योगदान करने का समान अवसर मिलना सुनिश्चित करती है। पहले चरण, विकसित भारत विवर्ज में देश भर के लगभग 3 मिलियन युवाओं द्वारा भाग लिया। 12 भाषाओं में आयोजित इस प्रतियोगिता में पिछले दशकों में भारत की प्रगति के बारे में उनके ज्ञान का परीक्षण किया गया, जिससे समावेश और पहुँच सुनिश्चित हुई। दूसरे चरण के तहत, विकसित भारत निबंधन-प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को महत्वपूर्ण मुद्रों पर गहराई से विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। पेश किये गए दो लाख से अधिक निबंधों में विकास के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने सतत विकास को अपनाने, सांस्कृतिक विवासत को संरक्षित करने और भारत

विकसित भारत चुनौती, जो तीन चरणों वाली प्रतियोगिता है। इस प्रतियोगिता को भारत के सबसे प्रतिभाशाली युवाओं की पहचान करने और उन्हें विकसित करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया है। यह चुनौती योग्यता, समावेश और पारदर्शिता पर आधारित है, जो भौगोलिक या पृथक्भूमि की परवाह किए बिना हर युवा भारतीय को योगदान करने का समान अवसर मिलना सुनिश्चित करती है। पहले चरण, विकसित भारत विक्षित में देश भर के लगभग 3 मिलियन युवाओं ने भाग लिया। 12 भाषाओं में आयोजित इस प्रतियोगिता में पिछले दशकों में भारत की प्रगति के बारे में उनके ज्ञान का परीक्षण किया गया, जिससे समावेश और पहुँच सुनिश्चित हुई। दूसरे चरण के तहत, विकसित भारत निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को महत्वपूर्ण मुद्दों पर गहराई से विचार करने के लिए प्रौत्साहित किया गया। पेश किये गए दो लाख से अधिक निबंधों में विकास के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने, सतत विकास को अपनाने, सांख्यिक विरासत को संरक्षित करने और भारत

A large group photograph of approximately 50 people, mostly young adults, posing in two rows against a backdrop featuring a large screen. The screen displays the text "YOUNG LEADER'S DIALOGUE NATIONAL DECLAMATION FESTIVAL 2019" and "DECLAMATION EVENT". The participants are dressed in formal attire, including suits, dresses, and traditional wear. They are holding small blue and white flags. The setting appears to be a conference or event hall.

आकांक्षाओं को नीति निर्माण अंतर्राष्ट्रीय के साथ जोड़ेगा। 11 जनवरी को एक भव्य उद्घाटन सत्र के साथ संवाद की शुरूआत होगी, जिसमें राष्ट्रीय प्रतीक, वैचारिक नेता और नवोन्मेषक भाग लेंगे। यह उच्च-स्तरीय चर्चा दस महत्वपूर्ण विषयों पर विषयगत विचार-विमर्श के लिए मंच तैयार करेगी, जिसका नेतृत्व सलाहकार और क्षेत्र (डोमेन) विशेषज्ञ करेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम, ह्लविकसित भारत के रंगहू के साथ सध्या बेला जीवंत हो उठेरी, जिसमें भारत की कलात्मक विरासत को प्रदर्शित किया जाएगा और यह हमारे युवाओं की असीम क्षमता का भी प्रतीक होगा। यह दिन बौद्धिक विमर्श और सांस्कृतिक उत्सव के बीच एक आदर्श संतुलन बनाता है, जो प्रतिभागियों को बड़े सपने देखने और निर्णायक रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। राष्ट्रीय युवा दिवसः विकसित भारत के लिए एक विजन स्वामी विवेकानन्द की जयती और युवा सशक्तिकरण की उनकी चिरस्थायी विरासत का सम्पादन करने के लिए 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा आयोजन का अंतिम दिन होगा, जो प्रत्येक प्रतिभागी के लिए एक निर्णायक क्षण साबित होगा। विषयगत ट्रैक से शीर्ष दस विचार माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के समक्ष प्रस्तुत किए जाएंगे, जो नवोन्मेषी युवाओं को आगे बढ़ने के लिए एक प्रेरक मंच प्रदान करेगा। यह संवाद शासन और निर्णयदाता लेने में युवाओं को शामिल करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता पर जोर देता है। इसके बाद, प्रतिभागियों को माननीय प्रधानमंत्री और अन्य प्रतिष्ठित नेताओं के साथ दोपहर के भोजन पर बातचीत करने का अवसर मिलेगा। इससे साथें बातचीत को बढ़ावा मिलेगा, युवाओं को यादगार पलों को संजोने का मौका मिलेगा और उनमें सशक्तिकरण की भावना का विकास होगा। इस दिन प्रधानमंत्री के नेतृत्व में एक भव्य पूर्ण सत्र का भी आयोजन होगा। यह सत्र विकसित भारत को आकार देने में भारत के युवाओं की परिवर्तनकरी विकास को सुदृढ़ करेगा। इस सत्र के जरिये प्रतिभागियों को बदलाव के उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने के लिए सशक्त और प्रेरित किया जाएगा।

राजनीति का अनुसार जातकों का फल दत ह

परिक्रमा करना, शनि स्त्रोत का पाठ करना, शनिवार का व्रत करना और काला कंबल, उड़ट की दाल, काले तिल, काला कपड़ा, लौह पात्र का दान करना लाभकारी बताया जाता है। प्रतिदिन एक माला शनि कंत्र अँ शनैश्चयाय नमः का जप करने से भी लाभ होता है, बताया जाता है जब शनि 01 जनवरी से 29 मार्च 2025 तक कुम्ह राशि में रहेगे, तब साढ़ेसाती की स्थिति में मकर राशि बालों को उत्तरती हुई शनि का प्रभाव पैरों पर रहेगा। वयोंकि उत्तरती हुआ साढ़ेसाती शनि का प्रभाव सामान्य तौर पर शुभ फल प्रदान करता है



लेखक

थलग थे। प

३८

न्याय के दबता माना जाता है। शनिदेव की पूजा प्रेम के कारण नहीं बल्कि डर के कारण की जाती है। क्योंकि शनिदेव कर्मों के अनुसार जातकों को फल देते हैं। जातक के अच्छे कर्म पर शनिदेव की कृपा बनी रहती है और बुरे कर्मों में लित रहने वालों पर शनिदेव का प्रकाष्प भरसता है। शास्त्र के अनुसार, शनिदेव को भगवान सूर्य और माता छाया के पुत्र बताया गया है। शनिदेव का वर्ण कष्ट है और इनकी सवारी कौआ है। किदर्वती है कि शनिदेव श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त में से एक थे और बाल्यावस्था में ही भगवान श्रीकृष्ण की आराधना में लीन रहते थे। शनिदेव का विवाह चित्ररथ की कन्या से हुआ था। एक बार जब उनकी पत्नी पुत्र प्राप्ति की इच्छा लिए शनिदेव के पास पहुंची, तो उन्होंने देखा कि शनिदेव श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन थे और बाहरी संसार से पूर्ण रूप से अलग गई, तब क्रोधित होकर शनिदेव का श्राप देते हुए कही कि आप जिसे भी देखेंगे वह नष्ट हो जाएगा। शनिदेव का जब ध्यान टूटा तो पत्नी को आप मुक्त करने के लिए बहुत मनया। पत्नी को पश्चात्याप होने लगा, लेकिन श्राप वापस लेने की शक्ति उनमें नहीं थी, इसलिए शनिदेव अपना सर नीचा करके रहने लगे, ताकि किसी पर भी विपत्ति न आए। किंवदंतियों वह भी है कि जब सूर्यदेव पत्नी छाया के पास पहुंचे तो उनकी प्रकाश से छाया ने अपनों आँखें बंद कर ली, जिसके कारण शनिदेव का रंग श्याम अर्थात् काला पड़ गया। शनिदेव पिता से क्रोधित होकर भगवान शंकर की धोर तपस्या की और तपस्या से शनिदेव का पूरा शरीर जल गया। शनिदेव की भक्ति से और होकर भगवान शिव ने उनसे वरदान मांगने को कहा। शनिदेव ने वरदान कहा कि मेरी पूजा मेरे पिता से अधिक हो और मेरे पिता का अपने प्रकाश का अहंकार



राशि में अडैया रहेगा। वर्षा 29 मार्च 2025 से वर्षान्त तक शनि मीन राशि में रहेगी। जब शनि 01 जनवरी से 29 मार्च 2025 तक कुम्भ राशि में रहेंगे, तब साढ़ेसाती की स्थिति में मकर राशि वालों को उत्तरती हुई शनि का प्रभाव पैरों पर रहेगा। क्योंकि उत्तरता हुआ साढ़ेसाती शनि का प्रभाव सामान्य तौर पर शुभ फल प्रदान करता है, जिसके प्रभाव से व्यापार में वृद्धि, धन-धान्य की समृद्धि, सामाजिक मान-सम्मान, राजकीय कार्यों में सफलता, मुकदमे बाजी में विजय, कर्ज से मँकि मिलती है। कुम्भ राशि वालों का मध्य की साढ़ेसाती होगा, शनि के प्रभाव से धन लाभ, स्त्री-पुत्र सुख, प्रगति के मार्ग बनेंगे, स्वास्थ्य ठीक रहेगा, सम्पत्ति का लाभ होगा। मीन राशि वालों को चढ़ती हुई साढ़ेसाती शनि का प्रभाव मस्तक पर रहेगा। जिसके प्रभाव से व्यापार में प्रगति, धन-धान्य में समृद्धि, सुख-शार्ति, अचानक लाभ, पदोन्नति, स्थिति में कक राशि वालों का लघु कल्याणी अडैया शनि का प्रभाव रजत पाद से होने के कारण व्यापार में वृद्धि होगी, धन-धान्य में समृद्धि बढ़ेगी, सुख सम्पदा का लाभ होगा। वृश्चिक राशि वालों को लघु कल्याणी अडैया शनि का प्रभाव होगा, जिसके प्रभाव से शारीरिक कष्ट, परिवारिक क्लेश, निजी जनों का विरोध, व्यापारिक परेशानियाँ, सतन और रोगी के कार्यों में विशेष खर्च हो सकता है। जब शनि 29 मार्च 2025 से वर्षान्त तक मीन राशि में रहेंगे, तब साढ़ेसाती शनि कुम्भ राशि वालों की उत्तरती हुई शनि का प्रभाव पैरों पर होगा, जिसके प्रभाव से नीकी एवं व्यापार में प्रगति होगी, धन धान्य की समृद्धि होगी, पुराना पैसा मिलेगा, कानूनी मामलों में सफलता, राजकीय क्षेत्र में उन्नति, शत्रु भी मित्र का काम करेंगे, पुराने लेनदेन की पूर्ति, व्यापार में कुछ नये शत्रु उभर सकते हैं, वर्षान्त में शारीरिक कष्ट होगा। जिसके प्रभाव से निजी जन का विरोध, शत्रु संख्या में वृद्धि, घेरेलू परेशानी, स्वास्थ्य चिंता, पुराने रोगों से कष्ट, भाई बच्चों को विरोध, बटवारे जैसी घटनायें हो सकती हैं। मेष राशि वालों को चढ़ती हुई साढ़ेसाती का प्रभाव मस्तक पर होगा। (जिसके प्रभाव से व्यापार-व्यवसाय में प्रगति होगी, अधिकारियों से मेल-जोल बढ़ेगा। धन-धान्य की समृद्धि होगी। अडैया की स्थिति में सिंह राशि वालों को शारीरिक पीड़ा हो सकती है। धनु राशि वालों को शारीरिक कष्ट हो सकता है, चोट-च्पेट की सम्प्रभवना, रक्त विकार, स्त्री-पुत्र की चिंता, व्यापार में परिश्रम अधिक लाभ कम रहेगा, लेन-देन की चिंता एवं चोरी का भय रहेगा। शनि की साढ़ेसाती और अडैया की स्थिति में शनि के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए उपाय के रूप में प्रति शनिवार को तेल में अपना मुँह देखकर छायादान करना।

विश्व मंडल को उच्च व्यक्तित्व और आत्म दर्शन से प्रभावित किया है। उन्होंने बाहर की यात्रा की अपेक्षा, महान विचारक स्वामी जी भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवता का गैरव बढ़ाया। स्वामी विवेकानन्द ने भारत में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक बड़ी कहा था-यदि आप भारत को जान चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िए।

इसलिए, उनको पूर्णता सबत्र व्याप्त है। स्वामी जी युवाओं के प्रेरणा स्रोत है और युवाओं के लिए जो ब्रह्मा वाक्य उन्होंने कहा है, वह हमेसा से श्रेष्ठ है और श्रेष्ठ रहेगा। उन्होंने युवाओं को हीन भावनाओं से ऊपर उठकर एक उच्च एवं आदर्श व्यक्तित्व विकसित करने को कहा है। स्वामी विवेकानन्द के संबंध में जास्टिस राजेंद्र प्रसाद, पूर्व न्यायाधीश, पटना उच्च न्यायालय, पटना ने कहा कि ब्रह्मा स्वयं ही विवेकानन्द के रूप में उपस्थित होकर महान कार्यों का संपादन किया है। यह उनके ब्रह्म के प्रति निष्ठा से स्पष्ट हो जाता है। उन्होंने भारतीय वेदांत दर्शन, वेदांतिका वेदों के वेदांतिका वेदों

को बद व आध्यात्मिक विरासत का आगे बढ़ाया। वह स्वर्यं भारतीय दर्शन के गुण ज्ञात थे और हिन्दू परंपरा के एकनिष्ठ संकलिप्त ऐसे सन्धारी थे जिन्होंने हिन्दू धर्म और सनातन धर्म के सदेश को सम्पूर्ण विश्व मंडल में फैलाया तथा अपनी धर्म, संस्कृति की सर्वोच्चता स्थापित किया। स्वामी जी हमेशा सकारात्मक पक्ष की ओर युवाओं का ध्यान आकृष्ट किया है। तीस वर्ष की आयु में उन्होंने अमेरिका के शिकागो में ह्विश्व धर्म सम्मेलनहृ में भारत का प्रतिनिधित्व किया और हिन्दू तथा सनातन धर्म की सार्वभौमिकता से पूरे विश्व के

को नदिया उत्पन्न हुई हैं, उसी से सभी औषधियाँ और स्वाद भी उत्पन्न हुए हैं, जो भूतों से चिरे हुए हैं, अथात् स्थूल तत्वों के मध्य में आत्मा अर्थात् सूक्ष्म शरीर में बैठा है। इस सृष्टि में जौ भी दृश्य है, उसकी उत्तरि, रिथिति और प्रलय आत्मा में ही होता है। वह आत्मा पुरुष रूप में सर्वत्र व्याप्त है। वह चिराट और सूक्ष्म भी है। इस संबंध में सांख्यक हत्ता है। पुरुष एवं विश्वं कर्म तपो ब्रह्म परमार्थम्। एतद्यो वेद निहितं गुहायां सोऽविद्याग्रंथि विकारीताहा सोम्या॥ इस तरह से यह पुरुष ही यह सब जगत है - कर्म और तप। यह सब ब्रह्म है, परम और अमर है।

मन को ब्रह्म में स्थिर करके, हे सुन्दर युवक! अपने लक्ष्य पर प्रहार करो। इस संसार में कुछ भी ऐसा नहीं है, जिसे तुम प्राप्त नहीं कर सकते हो। सम्पूर्ण सृष्टि ही तुम्हारी है हे सुन्दर युवा, अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करा। उससे सुंदर न कोई था, न है और न भविष्य में होगा। उस चिर सुंदर को जानो। जो नित्य युवा है, वह आत्मा ही है और वह तुम ही हो। तुम समस्त अवस्था से परे है और सदा पूर्ण हो। अपनी पूर्णता हो प्रदर्शित और अपने लक्ष्य को परिलक्षित करो। गुरु के प्रति निष्ठा: स्वामी विवेकानंद योगी स्वभाव के थे, उनके गुरु महान् योगी एवं भाता काली थे।

